पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VIII Subject-Hindi

Summative Assessment Assignment-1(2020-21)

अपठित-विभाग

प्र-१ अपठित गद्यांश और पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

संसार में शांति, व्यवस्था और सद्भावना के प्रसार के लिए बुद्ध, ईसा मसीह, मुहम्मद चैतन्य, नानक आदि महापुरुषों ने धर्म के माध्यम से मनुष्य को परम कल्याण के पथ का निर्देश किया, किंतु बाद में यही धर्म मनुष्य के हाथ में एक अस्त्र बन गया। धर्म के नाम पर पृथ्वी पर जितना रक्तपात हुआ उतना और किसी कारण से नहीं। पर धीरे-धीरे मनुष्य अपनी शुभ बुधि से धर्म के कारण होने वाले अनर्थ को समझने लग गया है। भौगोलिक सीमा और धार्मिक विश्वासजनित भेदभाव अब धरती से मिटते जा रहे हैं। विज्ञान की प्रगति तथा संचार के साधनों में वृद्धि के कारण देशों की दूरियाँ कम हो गई हैं। इसके कारण मानव-मानव में घृणा, ईर्ष्या वैमनस्य कटुता में कमी नहीं आई। मानवीय मूल्यों के महत्त्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का एकमात्र साधन है शिक्षा का व्यापक प्रसार।

प्रश्न

(क) **मनुष्य अधर्म के कारण होने वाले अनर्थ को कैसे समझने लगा है?**

- अपनी शुभ बुधि से

(ख) **विज्ञान की प्रगति और संचार के साधनों की वृद्धि का परिणाम क्या हुआ है?**

- देशों की दूरियाँ कम हुई है।

ग देश में आज भी कौन-सी समस्या है?

- वर्ण-भेद की

(ग) **किस कारण से देश में मानव के बीच, घृणा, ईर्ष्या, वैमनस्यता एवं कटुता में कमी नहीं आई है?**

(i) **नफ़रत से**

(ii) **सांप्रदायिकता से**

(iii) **अमीरी गरीबी के कारण**

<u>(iv) **वर्ण-भेद के कारण**</u>

(घ) **मानवीय मूल्यों के महत्त्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का एकमात्र साधन है?**

- शिक्षा का व्यापक प्रसार

(2) बातचीत करते समय हमें शब्दों के चयन पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि सम्मानजनक शब्द व्यक्ति को उदात्त एवं महान बनाते हैं। बातचीत को सुगम एवं प्रभावशाली बनाने के लिए सदैव प्रचलित भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए। अत्यंत साहित्यिक एवं क्लिष्ट भाषा के प्रयोग से कहीं ऐसा न हो कि हमारा व्यक्तित्व चोट खा

जाए। बातचीत में केवल विचारों का ही आदानप्रदान नहीं होता, बल्कि व्यक्तित्व का भी आदान-प्रदान होता है। अतः शिक्षक वर्ग को शब्दों का चयन सोच-समझकर करना चाहिए। शिक्षक वास्तव में एक अच्छा अभिनेता होता है, जो अपने व्यक्तित्व, शैली, बोलचाल और हावभाव से विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और उन पर अपनी छाप छोड़ता है।

प्रश्न

(क) शिक्षक होता है
(i) राजनेता
(ii) साहित्यकार
(iii) अभिनेता
(iv) कवि

(ख) बातचीत में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करना चाहिए?
(i) अप्रचलित
(ii) प्रचलित
(iii) क्लिष्ट
(iv) रहस्यमयी

(ग) शिक्षक वर्ग को बोलना चाहिए?
(i) सोच-समझकर
(ii) ज्यादा
(iii) बिना सोचे-समझे
(iv) तुरंत

(घ) बातचीत में आदान-प्रदान होता है-
(i) केवल विचारों का
(ii) केवल भाषा का
(ii) केवल व्यक्तित्व का
(iv) विचारों एवं व्यक्तित्व का

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है
(i) बातचीत की कला
(ii) शब्दों का चयन
(iii) साहित्यिक भाषा
(iv) व्यक्तित्व का प्रभाव

उत्तर-
(क) (iii)
(ख) (iii)
(ग) (i)
(घ) (iv)
(ङ) (ii)

(3) वृक्षों से मानव को अनेक लाभ हैं। सूर्य के प्रकाश में वृक्ष अत्याधिक मात्रा में ऑक्सीजन का निर्माण करते है, जिससे वातावरण की शुदिध होती है। वृक्षों से तापमान का नियंत्रण होता है।वृक्षों से हमें लकड़ियाँ, फल, औषधियाँ, खाद भी मिलती है।

1 सूर्य के प्रकाश में वृक्ष किसका निमार्ण करते हे?
-सूर्य के प्रकाश में वृक्ष अत्याधिक मात्रा में अक्सीजन का निर्माण होता है।
2 वृक्ष किसका नियंत्रण करते है?
- वृक्षों से तापमान का नियंत्रण होता है।
3 वृक्षों से हमें क्या-क्या मिलाता है?
- वृक्षों से हमें लकडियाँ, फ़ल, औषधियाँ, खाद भी मिलता है।
4 गदयांश का शीर्षक लिखिए।
- वृक्षो का महत्व
5 सूर्य, प्रकाश का पर्यायवाची शब्द लिखिए।
- रवि, उजाला

(4) धरती के आँचल में सजी
सँवरी हैं स्वर्ण रश्मियाँ,
खेतों में आज बिखरा है सोना
जिसे देख कर महका
कृषक मन का कोना-कोना।
किया धरती का सोलह-सिंगार
चमचमाते नयन बार-बार,
धानी चुनर में मोती सजे हैं
ढोल, ताशे और बाजे बजे हैं
दिल की वीणा के झंकृत हैं तार
झूमें-गाएँ सबके मन बार-बार।
हुए आँखों में सब सपने साकार
फिर से जागी हैं उम्मीदें हजार।

1. खेतों में क्या बिखरा हुआ है?
-खेतों में सोना बिखरा हुआ है।
2. किसान के नयन क्यों चमचमाते हैं?
- क्योंकि खेतों में आज फिर अनाज उगा है।
3 किसने सोलह-सिंगार किया है?
धरती ने सोलह-सिंगार किया है।
4-"नयन " शब्द के दो समान अर्थ लिखिए।
- " आँख ", " नेत्र "
5-उपयुक्त पद्यांश का शीर्षक लिखिए।
- " किसान और खेत "

(5) एक किरण आई छाई
दुनिया में ज्योति निरालो।
रँगी सुनहरे रंग में
पत्ती-पत्ती ,डाली,डाली।।
एक किरण आई
पूरब में सुखद सवेरा।
हुई दिशाएँ लाल,
लाल हो गया धरा का फेरा।।

1 किरण के आने से दुनिया में कैसी ज्योति छाई?
- किरण के आने से दुनिया में निराली ज्योति छाई है।

2 पत्ती और डाली कैसे रग में रंग गए?
- पत्ती और डाली किरण के रंग में रंग गए।

3 पूरब में कैसा सवेरा छाया?
- पूरब में सुखद सवेरा छाया।

4 दिशाएँ कैसी हो गई?
- दिशाएँ लाल हो गई।

5 धरा,दुनिया के पर्यायवाची शब्द लिखिए।
- धरती, विश्व

(6) छुट्टी का घंटा बजते ही स्कूलों से
निकल-निकल आते हैं जीते-जागते बच्चे,
हँसते-गाते चल देते हैं पथ पर ऐसे
जैसे सास्वत भाव वही हो कविताओं के
बंद किताबों से बाहर छंदों से निकले
देश-काल में व्याप रही है जिनकी गरिमा।
मैं निहारता हूँ उनको फिर-फिर अपने को
और भूल जाता हूँ अपनी क्षीण आयु को।

प्रश्न:

(क) बच्चों के चेहरों पर ताजगी और खिलखिलाहट कब आ जाती है?

1. **छुट्टी का घंटा बजते ही**
2. छुट्टी होने पर
3. अध्यापिका के न आने पर
4. प्रार्थना-सभा न होने पर

(ख) स्कूल की सीमा से बाहर निकले बच्चों की तुलना किससे की गई है?

1. जीते-जागते व हँसते-गाते लोगों से
2. बंद कविताओं से निकले छंद
3. कविताओं के चमकते भाव
4. **उपरोक्त तीनों**

(ग) कवि को अपना बचपन कब याद आता है?

1. बच्चों को जीते-जागते देखकर
2. बच्चों को हँसते-गाते देखकर
3. स्कूल से भाग-भागकर आते देखकर
4. **उपरोक्त सभी**

(घ) बच्चों को हँसते-गाते देखकर कवि क्या अनुभव करता है?

1. अपनी ढलती आयु को भूल जाता है
2. पुनः बचपन में लौट जाता है
3. ताजगी अनुभव करता है
4. **उपरोक्त सभी**

(साहित्य-विभाग)

प्र-1 एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

प्रश्न- लाख की चूडिया कहानी के लेखक कौन हैं?

उत्तर -इस कहानी के लेखक कामतानाथ जी हैं।

प्रश्न- रज्जो कौन थी?

उत्तर -रज्जो बदलू की बेटी थी।

प्रश्न- लेखक ने पाठ में अपना क्या नाम बताया है?

उत्तर - लेखक ने पाठ में अपना नाम जनार्दन बताया है।

प्रश्न- बदलू अपना कार्य किस चीज़ पर बैठ कर करता था?

उत्तर- बदलू अपना कार्य एक मचिये पर बैठ कर करता था जो की बहुत पुरानी थी।

प्रश्न- गाँव में लेखक का दोपहर का समय अधिकतर कहाँ बीतता?

उत्तर -गाँव में लेखक का दोपहर का समय अधिकतर बदलू के पास बीतता।

प्रश्न- बदलू लेखक को क्या कह कर बुलाता था?

उत्तर - बदलू लेखक को 'लला' कह कर बुलाता था।

प्रश्न- लेखक ने पाठ में अपना क्या नाम बताया है?

उत्तर - लेखक ने पाठ में अपना नाम जनार्दन बताया है।

प्रश्न- बदलू को संसार में किस चीज़ से चीढ़ थी?

उत्तर - बदलू को संसार में सबसे ज़्यादा काँच की चूड़ियों से चीढ़ थी।

प्रश्न- बदलू का स्वभाव कैसा था?

उत्तर - बदलू का स्वभाव बहुत सीधा था क्योंकि लेखक ने कभी भी उसे झगड़ते नहीं देखा था।

प्रश्न- लेखक को क्या देखकर लगा कि बस इसमें गोता लगाएगी?

उत्तर-झील

प्रश्न- लेखक ने बस को कैसी अवस्था में बताया?

उत्तर– वृद्धावस्था

प्रश्न- पाठ 'बस की यात्रा' के लेखक कौन हैं?

उत्तर– पाठ 'बस की यात्रा' के लेखक हरिशंकर परसाई जी हैं।

प्रश्न- पहली बार बस किस कारण रुकी?

उत्तर - पेट्रोल की टंकी में छेद होने के कारण पहली बार बस रुकी।

प्रश्न-कंपनी के हिस्सेदार ने बस के लिए क्या कहा?

उत्तर - कंपनी के हिस्सेदार ने बस के लिए कहा - बस तो फर्स्ट क्लास है जी !

प्रश्न- लेखक के अनुसार देवता बाँहें पसारकर किसका स्वागत करते?

उत्तर– लेखक के अनुसार देवता बाँहें पसारकर कंपनी के हिस्सेदार का स्वागत करते।

प्रश्न- 'दीवानों की हस्ती' कविता के रचयिता कौन है?

उत्तर– 'दीवानों की हस्ती' कविता के रचयिता भगवतीचरण वर्मा हैं।

प्रश्न- कवि सुख और दुःख को किस भाव से ग्रहण करता है?

उत्तर – कवि सुख और दुःख को समान भाव से ग्रहण करता है।

प्रश्न- कवि किस बात के लिए संघर्षरत रहता है?

उत्तर - कवि समाज की भलाई के लिए हमेशा संघर्षरत रहता है।

प्रश्न-कवि सुख - दुःख की भावना से निर्लिप्त क्यों है?

उत्तर - कवि सुख - दुःख की भावना से इसलिए निर्लिप्त है क्योंकि वह सुख और दुःख को समान भाव से देखता है।

प्रश्न-कवि किन बंधनों को तोड़ने की बात कर रहा है?

उत्तर - कवि समाज में व्याप्त बुराइयों, रूढ़िग्रस्त रीती - रिवाज़ों के परंपरागत बंधनों को तोड़ने की बात कह रहा है।

प्रश्न- कवि ने दुनियाँ को भिखमंगा क्यों कहा है?

उत्तर - कवि ने दुनियाँ को भिखमंगा इसलिए कहा है क्योंकि दुनिया में सभी लोग एक दूसरे से कुछ न कुछ माँगते रहते हैं।

प्रश्न- 'भगवान के डाकिए' कविता के रचयिता कौन हैं?

उत्तर - 'भगवान के डाकिए' कविता के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' जी हैं।

प्रश्न- क्या बादल सीमाओं को मानते हैं?

उत्तर - नहीं, बादल सीमाओं को नहीं मानते हैं।

प्रश्न- भगवान के डाकिए किन्हें कहा गया है?

उत्तर – भगवान के डाकिए पक्षी और बादल को कहा गया है।

प्रश्न- इस कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर – एकता, भाईचारे और सप्रेम से मिलजुलकर रहने का संदेश देना चाहता है।

प्रश्न- रेलों से भी तेज गति से संवाद किसने पहुँचाया?

उत्तर –रेलो से भी तेज गति से फैक्स, ई-मेल ने पहुँचाया।

प–2 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न- वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है?

उत्तर - इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है, मौसम सुहावना हो जाता है, पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं, आम के पेड़ बौरों से लद जाते हैं और खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं । अतः राग रंग और उत्सव मनाने के लिए यह ऋतु सर्वश्रेष्ठ मानी गई है और इसलिए इसे ऋतुराज कहा गया है।

प्रश्न–कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है?

उत्तर – कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए उन पर अपना हाथ फेरकर उन्हें जगाना चाहता है। वह उनको चुस्त, प्राणवान, आभावान व पुष्पित करना चाहता है। यहाँ कलियाँ आलस्य में पड़े युवकों का प्रतीक है। अतः कवि नींद में पड़े युवकों को प्रेरित कर उनमें नए उत्कर्ष के स्वप्न जगाना चाहता है। उनके आलस्य को दूर भगा कर उनमें उत्साह का संचार करना चाहता है।

प्रश्न- फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन-कौन-सा प्रयास करता है?

फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि उन्हें कलियों की स्थिति से निकालकर खिले फूल बनाना चाहता है। कवि का मानना है कि अभी - अभी उसके जीवन में वसंत की बहार आई है। इसलिए वह अपने कोमल हाथों को इन कलियों पर फेर कर उनमें एक नई सुबह को जागृत कर देगा। वह उनके आलस्य को दूर भगा कर और उनमें उत्साह का संचार कर देना चाहता है। अर्थात कवि युवकों के मन में निराशा की भावना को दूर कर उनको अमरता का द्धार दिखाना चाहता है।

प्रश्न- मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

मशीनी युग के कारण उसका सारा वसाय चौपट हो गया। उसने इस लाख को चूड़ियो के अलावा कभी और कुछ सीखा ही नहो था। जिसके कारण वह बेरोज़गार हो गया। अब वह कमज़ोर व बीमार हो गया था। उसक बेबसी लेख क को उसके चेहरे पर दखाई देने लगी थी। जिसने उसे एक बूढ़ा व बीमार बना

प्रश्न- लेखक के अनुसार देवता बाँहें पसारकर किसका स्वागत करते?

उत्तर– लेखक के अनुसार देवता बाँहें पसारकर कंपनी के हिस्सेदार का स्वागत करते।
उत्तर–इंजन स्टार्ट होने पर लेखक को लगा जैसे सारी बस ही इंजन है और वह इंजन के अंदर बैठा है।

प्रश्न- लेखक और उसके दोस्त खिड़की से दूर सरककर क्यों बैठ गए?

उत्तर– लेखक और उसके दोस्त खिड़की से दूर सरककर इसलिए बैठ गए ताकि खिड़की के काँच टूटकर उन्हें चोटिल न कर दें।

प्रश्न- विदा करने आए लोगों की प्रतिक्रिया देखकर लेखक को कैसा लगा?

उत्तर– विदा करने आए लोगों की प्रतिक्रिया देखकर लेखक को लगा कि जैसे वह मरने के लिए जा रहा हो और लोग उसे अंतिम विदाई देने आए हों।

प्रश्न- कवि ने अपने आप को दीवाना क्यों कहा है?

उत्तर - कवि ने अपने आप को दीवाना इसलिए कहा है क्योंकि वह मस्तमौला है। उसे किसी बात की फिक्र नहीं है। वह अपनी मस्ती में ही बिना किसी मंज़िल के आगे बढ़ा चला जा रहा है।

प्रश्न– कवि ने अपने आने को उल्लास और जाने को आँसू बनकर बह जाना क्यों कहा है?

उत्तर - कवि ने अपने आने को 'उल्लास' इसलिए कहा है क्योंकि उसके आने पर लोगों में जोश तथा ख़ुशी का संचार होता है। कवि लोगों में खुशियाँ बाटता है। इसी कारण लोगों के मन प्रसन्न हो जाते हैं।

पर जब वह उस स्थान को छोड़ कर आगे जाता है तब उसे तथा वहाँ के लोगों को दुःख होता है। विदाई के क्षणों में उनकी आँखों से आँसू बह निकलते हैं।

प्रश्न- चिठ्ठियों की तेजी को किसने प्रभावित किया है?

उत्तर - तार तथा रेलवे ने चिठ्ठियों की तेजी को बढ़ाया वहीं फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ने चिठ्ठियों की तेजी को रोका है।

प्रश्न- आज़ादी के समय में पत्रों ने किस प्रकार भूमिका निभाई?

उत्तर - आज़ादी के आंदोलन की कई अन्य दिग्गज हस्तियों के संदेश को जन - जन तक पहुँचाने में पत्र सहायक सिद्ध हुए।

प्रश्न- गाँवों या गरीब बस्तियों में किसे देवदूत के रूप में देखा जाता है?

उत्तर– गाँवों या गरीब बस्तियों में चिठ्ठी या मनीऑडर लेकर पहुँचने वाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

प्रश्न- पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए? लिखिए।

उत्तर - पत्र लेखन की कला को विकसित करने के लिए स्कूली पाठयक्रमों में पत्र लेखन का विषय भी शामिल किया गया। केवल भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया के कई देशों में भी प्रयास किए गए। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का कार्यक्रम सन् 1972 से शुरू किया गया।

प्रश्न- क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं?

उत्तर - पत्रों का अपना अलग महत्व है। पत्रों द्वारा हम अपने मनोभावों को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं लेकिन फ़ोन, एसएमएस द्वारा केवल कामकाजी बातों को संक्षिप्त रूप से व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों को हम अपने सगे-सम्बंधियों की धरोहर के रूप में सहेज कर रख सकते हैं। परन्तु फ़ोन या एस.एम.एस को हम सहेज कर नहीं रख सकते हैं। पत्रों से आत्मीयता झलकती है। इन्हें अनुसंधान का विषय भी बनाया जा सकता है। इन्हें बार बार पढ़ा जा सकता है।

- **प्रश्न- पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पत्रों के विषय में क्या कहा था?**

  उत्तर – पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पत्रों के विषय में सन् 1953 में कहा था कि हजारों सालों तक संचार का साधन केवल हरकारे रनर्स या फिर तेज़ घोड़े रहें हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया। तार ने रेलों से भी तेज़ गति से संवाद पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। अब टेलीफोन, वायरलैस और रेडार दुनिया बदल रहा है।

प्रश्न- पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है, कैसे?

उत्तर– **पिन** यानी कि "पोस्टल इंडेक्स नंबर"पिन कोड एक बहुत ही खास नंबर है, जिस पर हमारी पूरी डाक व्यवस्था निर्भर करती है। 6 नंबरों को मिलाकर तैयार किए गए यह कोड आपके क्षेत्र की पूरी जानकारी देते हैं। इसका हर नंबर किसी खास क्षेत्र के लिए ही तैयार किया गया है। इस प्रकार पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है।

प्रश्न- कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए इसलिए बताया है क्योंकि जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं, उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश हम तक पहुँचाते हैं। इन संदेशों को मनुष्य इतनी आसानी से नहीं पढ़ अथवा समझ पाते परन्तु पेड़ - पौधे, नदी - सागर आदि इनके संदेशों को बड़ी सरलता से पढ़ लेते हैं।

प्रश्न- पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधें, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?

उत्तर – पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधें, पानी और पहाड़ भगवान के भेजे एकता और सद्भावना के संदेश को पढ़ पाते हैं। तभी तो नदियाँ समान भाव से सभी लोगों में अपने जल को बाँटती है। पहाड़ भी सामान रूप से सबके साथ खड़ा होता है। हवा भी समान भाव से बहती हुई अपनी ठंडक, शीतलता व सुगन्ध को बाँटती है। पेड़-पौधें भी समान भाव से अपने फल, फूल व सुगन्ध को बाँटते हैं। ये सभी कभी भेदभाव नही करते। मानव को भी इनसे प्रेरणा लेकर प्रेम और सद्भावना को बढ़ाना चाहिए।

प्रश्न- हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका पर दस वाक्य लिखिए।

उत्तर - डाकिए का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। पहले की तुलना में बेशक डाकिए अब कम ही दिखाई देते हैं परन्तु आज भी गाँवों में डाकिए का पहले की तरह ही चिट्ठियों को आदान-प्रदान करते हुए देखा जा सकता है। चाहे कितना मुश्किल रास्ता हो, ये हमेशा हमारी चिट्ठियाँ हम तक पहुँचाते आए हैं। आज भी गाँवों में डाकियों को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। गाँव की अधिकतर आबादी कम पढ़ी लिखी होती है परन्तु जब अपने किसी सगे-सम्बन्धी को पत्र व्यवहार करना होता है तो डाकिया उनका पत्र लिखने में मदद करते है।

भारत की खोज

पाठ-1, 2

1) आपके अनुसार भारत यूरोप की तुलना में तकनीकी-विकास की दौड़ में क्यों पिछड़ गया था?

उत्तर- हमारे विचार में भारत यूरोप की तुलना में तकनीकी विकास की दौड़ में इसलिए पिछड़ गया क्योंकि उस समय इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति आरंभ हुई जबकि विश्व के कई देशों में पुनर्जागरण पंद्रहवीं शताब्दी में ही शुरू हो चुका था।

2) नेहरूजी की यह कौन-सी जेल यात्रा थी?

- नहरूजी की यह नौंवी जेल यात्रा थी।

3) नेहरूजी जेल में जाकर कौन-सा कार्य करने लगे?

- नेहरूजी जेल मे जाकर बागबानी का कार्य करने लगे।

4) नेहरू जी को किससे प्रेम था?

- नेहरूजी को पेड़-पौधो से ज्यादा प्रेम था।

5) दबाव कभी-कभी क्या बन जाता है?

- दबाव कभी-कभी दमघोंटू बन जाता है।

6) भारत की विविधता कैसी है?

- भारत की विविधता अदभूत है।

7) किस नाम से हमारे देश का नाम "इंडिया" या " हिन्दुस्तान" रखा गया?

- इंडस और सिंधु नाम से हमारे देश का नाम "इंडिया" या " हिंन्दुस्तान" रखा गया।

8) भारतीय सभ्यता कितने वर्ष पुरानी है?

- पाँच हजार वर्ष

9)सिन्धु घाटी की सभ्यता कब आरंभ हुई?

– 3300 ईसा पूर्व

10) भारत की खोज को किसका दर्जा हासिल है?

- भारत की खोज को विविधता और संस्कृति का दर्जा हासिल है।

व्याकरण-विभाग

प्र-1 सर्वनाम के भेद लिखिए।

1- यह मेरा घर है | - पुरुषवाचक सर्वनाम
2- दरवाजे पर कोई खड़ा है | - अनिश्चयवाचक सर्वनाम
3- वह खुद सामान लाएगा | - निजवाचक सर्वनाम
4- मोहन क्या पढ़ रहा है ? - प्रश्नवाचक सर्वनाम
5- बाहर कौन खड़ा है ? - प्रश्नवाचक सर्वनाम
6- जो मेहनत करेगा, वो सफल होगा | - संबधवाचक सर्वनाम
7- किसी ने दरवाजा खटखटाया है | - अनिश्चयवाचक सर्वनाम
8- तुम पढ़ाई कर लो | - पुरुषवाचक सर्वनाम
9- हम गाना सुनकर हँस पड़े | - पुरुषवाचक सर्वनाम
10- जैसा करोगे, वैसा भरोगे | - संबंधवाचक सर्वनाम
11- मुझे काम है। - पुरुषवाचक सर्वनाम
12 यहाँ कौन आया था? - प्रश्नवाचक सर्वनाम
13 मेरी कलम खो गई है। - निश्चयवाचक सर्वनाम
14 यह है उनका घर। - निश्चयवाचक सर्वनाम
15 वह मेरी कोई भी बात नहीं सुनती है। - पुरुषवाचक सर्वनाम
16 जैसा करोगे, वैसा भरोगे। - संबंधवाचक सर्वनाम

प्र-2 विशेषण को पहचानकर उसे रेखांकित कीजिए और उसके भेद बताइए।

1- मोहन चार मीटर कपड़ा लाया | - परिणामवाचक
2- मैदान में सात घोड़े दौड़ रहे हैं | - संख्यावाचक
3- यह शहर कपड़ों के लिए प्रसिद्ध है| - सार्वनामिक
4- बाढ़ में अनेक मकान डूब गए | - संख्यावाचक
5- टोकरी में ताजे फल रखे हुए हैं | - गुणवाचक
6- उस पौधे में नीले फूल खिल रहे हैं | - गुणवाचक
7- माँ बाजार से थोड़े चावल लेकर आयी | - परिणामवाचक
8- इस कबूतर को पिंजरे से निकालो | - सार्वनामिक
9- राम तीन सदूक लाया | - संख्यावाचक
10- मोहन स्वभाव से निर्दयी है | - गुणवाचक
11- नेहा ने लाल रंग की फ्रॉक पहनी है। - गुणवाचक
12- बेईमान नेता पकड़ा गया। - गुणवाचक
13- चारों मज़दूर काम कर रहे हैं। - संख्यावाचक

14- दस किलो आटा दे दो। - परिणामवाचक

15- उसे थोड़ी चाय पिलाओ। -परिणामवाच

प्र-3 निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्दों के भेद लिखिए|

1-खिड़की- -**जातिवाचक** 2- हरियाली- **भाववाचक**

3-खुश- -**भाववाचक** 4-अभिशाप- -**भाववाचक**

5- रामायण- **व्यक्तिवाचक** 6- हाथी-**व्यक्तिवाचक**

7- कड़वापन- - **भाववाचक** 8-**मिठास**-**भाववाचक**

9- दिल्ली-**व्यक्तिवाचक** 10-**गर्मी**- **भाववाचक**

11- हिमालय- -**व्यक्तिवाचक** 11- **रामचरित मानस**- -**व्यक्तिवाचक**

12-समूहवाचक संज्ञा किसे कहते है?उदाहरण सहित समझाइए।

उ- जिन संज्ञा शब्दों से किसी भी व्यक्ति या वस्तु के समूह का बोध होता है, उन शब्दों को समूहवाचक या समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। **जैसे-** भीड़, पुस्तकालय, झुंड, सेना आदि।

- भारतीय **सेना** दुनिया की सबसे बड़ी सेना है।
- कल बस स्टैंड पर **भीड़** जमा हो गयी।

वर्ण अक्षर- भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिस के टुकड़े नहीं किए जा सकते, वह वर्ण कहलाती है।

जैसे→अ, र, क्, म्, च् आदि

- भाषा के दो रूप होत है।

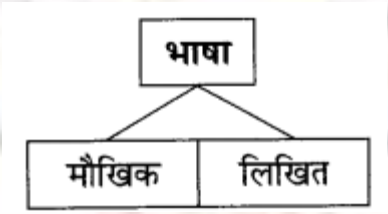

स्वर **(vowel)** - उन ध्वनियों को कहते हैं जो बिना किसी अन्य वर्णों की सहायता के उच्चारित किये जाते हैं। स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण,स्वर कहलाते हैं। हिन्दी भाषा में मूल रूप से ग्यारह स्वर होते हैं। ग्यारह स्वर के वर्ण : अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ए,ऐ,ओ,औ आदि।

1) भाषा के कितने रूप है? कौन-कौन से?

-भाषा के दो रूप है। मौखिक, लिखित।

2)वर्ण किसे कहते हैं?

– भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिस के टुकड़े नहीं किए जा सकते, वह वर्ण कहलाती है।

3) स्वर की संख्या कितनी है?

- स्वर ग्यारह होते हैं।

समास

1) <u>अव्ययीभाव समास</u>

इस समास में पहला पद पूर्व पद प्रधान होता है और पूरा पद अव्यय होता है इसमें पहला पद उपसर्ग होता है जैसे अ, आ, अनु, प्रति, हर, भर, नि, निर, यथा, यावत आदि उपसर्ग शब्द का बोध होता है।

(आजन्म) - जन्म पर्यन्त **(यथावधि) - अवधि के अनुसार**

(यथाक्रम) - क्रम के अनुसार **आजीवन - जीवन पर्यँत**

2)<u>तत्पुरुष समास</u>

इस समास में दूसरा पद उत्तर पद अंतिम पद प्रधान होता है इसमें कर्ता और संबोधन कारक को छोड़कर शेष छः कारक चिन्हों का प्रयोग होता है जैसे – कर्म कारक, करण कारक, सम्प्रदान कारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक, अधिकरण कारक

(विद्यालय) - विद्या के लिए आलय **(राजपुत्र) - राजा का पुत्र**

(चिड़ीमार) - चिड़िया को मारने वाला **(जन्मांध) - जन्म से अँधा**

3) <u>द्विगु समास</u>

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक होता है विग्रह करने पर समूह का बोध होता है

त्रिफला- तीन फलो का समूह **(त्रिलोक) - तीनो लोकों का समाहार**

(नवरात्र) - नौ रात्रियों का समूह **(नवरात्र) - नौ रात्रियों का समूह**

4) <u>द्वंद्व समास</u>

इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। विग्रह करने पर बीच में 'और', 'या' का बोध होता है

(पाप-पुण्य) - पाप और पुण्य **(सीता-राम) - सीता और राम**

(ऊँच-नीच) - ऊँच और नीच **(खरा-खोटा) - खरा या खोटा**

माता पिता– माता और पिता

5) **कर्मधारय समास**

इसमें समस्त पद सामान रूप से प्रधान होता है इसके लिंग, वचन भी सामान होते हैं इस समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है विग्रह करने पर कोई नया शब्द नहीं बनता।

(**चन्द्रमुख**) - **चन्द्रमा के सामान मुख वाला** –

(**दहीवड़ा**) - **दही में डूबा बड़ा** –

(**चरण कमल**) - **कमल के समान चरण** –

(**नील गगन**) - **नीला है जो असमान** –

6) **बहुव्रीहि समास**

इस समास में कोई भी पद प्रधान न होकर अन्य पद प्रधान होता है विग्रह करने पर नया शब्द निकलता है पहला पद विशेषण नहीं होता है विग्रह करने पर समूह का बोध भी नहीं होता है|

(**वीणापाणी**) – **सरस्वती**

(**गजानन**) - **भगवान गणेश**

पीतांबर- श्रीकृष्ण

(**गिरधर**) - **भगवान श्रीकृष्ण**

लखन-विभाग

निम्नलिखित अनुच्छेद लिखिए।

1 वसंतऋतु

वसंत शीत के बाद आती है । भारत मे फरवरी और मार्च मे इस ऋतु का आगमन होता है । बहुत सुहावनी ऋतु है यह । इस ऋतु में सम जलवायु रहती है अर्थात् सर्दी और गर्मी की अधिकता नहीं होती है । इस ऋतु में प्रकृति में कई प्रकार से सुखद बदलाव दृष्टिगोचर होते हैं । इसलिए इसे ऋतुओं का राजा या ऋतुराज कहा जाता है । वसंत ऋतु मनमोहक ऋतु होती है । इस ऋतु में गुलाब, गेंदा, सूरजमुखी, सरसों आदि के फूल बहुतायत में फूलते हैं । हवा में इन फूलों की सुगंध और मादकता का प्रवेश होने लगता है । रंग-बिरंगे फूलों को देखकर आँखें तृप्त हो जाती हैं । पेडों की पुरानी पत्तियाँ झड़ती हैं और उनमें नई कोमल पत्तियों उग आती हैं । उधर टेसू के फूल और इधर आम की मंजरियाँ । नवकिसलयदल पेड़ों की शोभा में चार चाँद लगा देते हैं । खेतों में सरसों के पीले फूलों से तो समूचा परिदृश्य बदल जाता है । वसंत ऋतु प्रकृति का उपहार है । यह बीमारियों को दूर भगाने का काल है । जनसमूह नए उल्लास से भर जाता है । इसी उल्लास का प्रतीक है-वसंत पंचमी और होली का त्योहार । ललनाएँ वसंत पंचमी में प्रकृति से सामंजस्य बिठाते हुए पीली साड़ी पहनती हैं । किसान होली के गीत गाते हैं । लोकगीतों की धुन पर सब नाच उठते हैं ।मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षी भी बहुत खुश हैं । तितलियाँ फूलों पर मँडरा रही हैं, आम की मंजरियों से मुग्ध होकर कोयल ' कुहू-कुहू ' का रट लगा रही है । भौंरे क्यों चुप रहें, वे गुन-गुन करते हुए बागों में डोल रहे हैं । पिंजड़ा से ही सही तोतों का स्वर सुनाई पड़ ही जाता है ।

इस ऋतु में मच्छरों तथा अन्य हानिकारक कीटाणुओं का प्रकोप घट जाता है । लोग बिना थके अपना काम कर सकते हैं । रबी की फसल इस ऋतु में लगभग पक जाती है । बाजार में नए अनाज और नई सब्जियों आती हैं । लोग इनका पूरा आनंद लेते हैं ।वसंत ऋतु का सीधा संबंध प्रकृति से है । पेड़ों, पहाड़ों, नदियों और झीलों से है । बाग-बगीचों की मौजूदगी से है । अत: प्रकृति की देखभाल जरूरी है । पेड़ों की कम कटाई हो और नए पेड़ ओं । नदियों में स्वच्छ जल प्रवाहित हो । धरती पर बाग-बगीचों की भरमार हो । सब लोग खुशहाल हों । लोगों की पीड़ा घट जाए, वसंत यही चाहता है । वसंत सौंदर्य, उन्नति और नवयौवन का दूसरा नाम है ।

2) रक्षाबंधन

रक्षा बंधन का त्योहार भारतीय त्योहारों में से एक प्राचीन त्योहार है। रक्षा–बंधन यानि – रक्षा का बंधन, एक ऐसा रक्षा सूत्र जो भाई को सभी संकटों से दूर रखता है। यह त्योहार भाई–बहन के बीच स्नेह और पवित्र रिश्ते का प्रतिक है। रक्षाबंधन एक सामाजिक, पौराणिक, धार्मिक और ऐतिहासिक भावना के धागे से बना एक ऐसा पावन बंधन है, जिसे रक्षाबंधन के नाम से केवल भारत में ही नहीं बल्कि नेपाल और मॉरेशिस में भी बहुत धूम–धाम से मनाया जाता है। राखी के त्योहार को हम संपूर्ण भारतवर्ष में सदियों से मनाते चले आ रहे हैं। आजकल इस त्योहार पर बहनें अपने भाई के घर राखी और मिठाइयाँ ले जाती हैं। भाई राखी बाँधने के पश्चात् अपनी बहन को दक्षिणा स्वरूप रुपए देते हैं या कुछ उपहार देते हैं। रक्षाबन्धन एक हिन्दू व जैन त्योहार है, जो प्रतिवर्ष श्रावण मास जुलाई–अगस्त की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। श्रावण सावन में मनाये जाने के कारण इसे श्रावणी सावनी या सलूनो भी कहते हैं। रक्षाबंधन पर बहनें भाइयों की दाहिनी कलाई एक पवित्र धागा यानि राखी बाँधती है और उनके अच्छे स्वास्थ्य और लम्बे जीवन की कामना करती है। वहीं दूसरी तरफ भाइयों द्वारा अपनी बहनों की हर हाल में रक्षा करने का संकल्प लिया जाता है। प्रातः स्नानादि करके लड़कियाँ और महिलाएँ पूजा की थाली सजाती हैं। थाली में राखी के साथ रोली या हल्दी, चावल, दीपक, मिठाई, फूल और कुछ पैसे भी होते हैं। लड़के और पुरुष तैयार होकर टीका करवाने के लिये पूजा या किसी उपयुक्त स्थान पर बैठते हैं। पहले अभीष्ट देवता की पूजा की जाती है, इसके बाद रोली या हल्दी से भाई का टीका करके चावल को टीके पर लगाया जाता है और सिर पर फूलों को छिड़का जाता है, उसकी आरती उतारी जाती है और दाहिनी कलाई पर राखी बाँधी जाती है। भाई बहन को उपहार या धन देता है। आज यह त्योहार हमारी संस्कृति की पहचान है और हर भारतवासी को इस त्योहार पर गर्व है। हमें इस महान और पवित्र त्योहार के आदर्श की रक्षा करते हुए इसे नैतिक भावों के साथ खुशी–खुशी मनाना चाहिए।

3) व्यायाम का महत्व

मानव शरीर एक मशीन की तरह है । जिस तरह एक मशीन को काम में न लाने पर वह ठप पड़ जाती है, उसी तरह यदि शमा जा भी उचित संचालन न किया जाए तो उसमें कई तरह के विकार आने लगते हैं । व्यायाम शरीर के संचालन का एक अच्छा तरीका है । यह शरीर को उचित दशा में रखने में मदद करता है । व्यायाम के लिए अनेक प्रकार की विधियाँ काम में लाई जाती है । कुछ लोग दौड़ लगाते हैं तो कुछ दंड-बैठक करते हैं । बच्चे खेल-कूद कर अपना व्यायाम करते हैं । बुजुर्ग सुबह-शाम तेज चाल से टहलकर अपना व्यायाम करते है । साईकिल चलाना, तैरना, बाग-बगीचों में जाकर उछल-कूद करना

आदि व्यायाम की अन्य विधियाँ हैं । नवयुवकों में व्यायामशालाओं में जाकर व्यायाम करने की प्रवृति पाई जाती है । व्यायाम चाहे किसी भी प्रकार का हो, इससे हमें बहुत लाभ होता है । शरीर में ताजगी आती है तथा यह सुगठित बन जाता है । प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य करना चाहिए। व्यायाम करने से हमारा रक्त संचार बढ़ जाता है। उससे शरीर पुष्ट बनता है। व्यायाम के पहले हल्की तेल मालिश करने से अधिक लाभ होता है। व्यायाम के एकदम बाद पानी नहीं पीना चाहिये और तुरन्त बाद स्नान भी नहीं करना चाहिये। बन्द कमरे में एवं तंग कपड़ों में व्यायाम नहीं करना चाहिये।स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिषक निवास करता है। अतः जीवन में हर प्रकार की उन्नति के लिये व्यायाम करना जरूरी है।

पत्र-लेखन

1) बहन की शादी के लिए अवकाश प्रदान हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय के कक्षा 8वीं का विद्यार्थी हूँ। मेरे घर में मेरी बहन की शादी है। जिसकी दिनांक 10/09/2018 और 11/09/2018 निश्चित हुई है, मैं अपने पिता का इकलौता पुत्र हूँ, अतः शादी में बहुत से कार्यों में मेरा होना अति आवश्यक है। इसी कारण मुझे 08/09/2018 से 12/09/2018 तक का अवकाश चाहिए।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मुझे अवकाश प्रदान करने की कृपा करें, इसके लिए मैं आपका आभारी रहुँगा।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

नाम - स्वाधीन शर्मा

कक्षा - 8 वीं

रोल नंबर - 34

दिनांक - 07/08/2020

2) अपने क्षेत्र में डाक-व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए अपने क्षेत्र के डाकपाल को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

141, साकेत निवासी संघ,
मेरठ।
दिनांक 16 मई, 2020
सेवा में,
डाकपाल महोदय,
मुख्य डाकघर,
मेरठ कैन्ट,
मेरठ।

विषय- इलाके में डाक व्यवस्था दुरुस्त करने हेतु।
महोदय,
मैं आपका ध्यान साकेत निवासी संघ, मेरठ की ओर केन्द्रित कराना चाहता हूँ, हमारे क्षेत्र का डाकिया अपने कार्य के प्रति अत्यन्त लापरवाही दिखा रहा है। वह हमारे पत्र घर के बाहर फ़ेंक कर चला जाता है, या फिर छोटे बच्चों को पकड़ा देता है। इससे पत्रों के खोने का डर हमेशा बना रहता है। यद्यपि इलाके के अधिकांश घरों के द्वार पर 'पत्र-पेटिका' लगी हुई है, परन्तु वह उनमें पत्र नहीं डालता। हमने डाकिये से कई बार हाथ जोड़कर निवेदन भी किया है कि वह पत्रों को सही जगह पर डाले, पर जैसे वह हमारी बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देता है।
अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप उसे चेतावनी देते हुए कार्य के प्रति पूरी ईमानदारी बरतने को कहें। आपकी इस कृपा के लिए हम सदैव आभारी रहेंगे।
भवदीय
हस्ताक्षर.....
सचिव
किशोर
साकेत निवासी संघ

3) **अपने पिता को फीस शुल्क मांगने के लिए पत्र लिखें|**

केन्द्रीय विद्यालय,

विवेक विहार,

नई दिल्ली

दिनांकः

आदरणीय पिताजी,

सादर प्रणामढ

आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि घर में सभी सदस्य स्वस्थ हैं। मैं भी यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ। बहुत दिनों से घर आने की सोच रहा था। परन्तु परीक्षा परिणाम देखने के लिए रुकना पड़ा। आगे का समाचार यह है कि मेरी परीक्षा का परिणाम आ गया है। आपको यह जानकर अत्यंत खुशी होगी कि मैं अपनी कक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुआ हूँ। मैंने अपनी कक्षा में **95** प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। मेरे द्वारा किया गया परिश्रम व्यर्थ नहीं गया है। मेरे मित्रों ने भी द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया है। सभी अध्यापक मेरे परीक्षा परिणाम से बहुत प्रसन्न हैं।

मैं अब नौवीं कक्षा में आ गया हूँ। अगले महीने से हमारी नौवीं की कक्षा आरंभ होने वाली है। इसलिए अपनी नई कक्षा के लिए मुझे किताबें, कापियाँ एवं वर्दी खरीदनी है। अध्यापिका द्वारा हमें तीन महीने की फीस भी भरने को कहा गया है। उनके अनुसार

जितनी जल्दी हो सके किताबें, कापियाँ एवं वर्दी आ जानी चाहिए। आपने इस महीने के खर्च के जो पैसे दिए थे, वे खत्म होने वाले हैं।

अतः आपसे निवेदन है कि कृपा करके चार हज़ार रुपए का इंतज़ाम कर, डाक द्वारा शीघ्र भिजवा दें।

अब पत्र समाप्त करता हूँ। माताजी को प्रणाम कहिएगा एवं सोनाक्षी को प्यार। पत्र अवश्य लिखते रहिएगा। आपके पत्र का इंतज़ार रहेगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

अभिषेक

संवाद लखन

1)परीक्षा के एक दिन पूर्व दो मित्रों की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

अक्षर– नमस्ते विमल, कुछ परेशान से दिखते हो?
विमल– नमस्ते अक्षर, कल हमारी गणित की परीक्षा है।
अक्षर– मैंने तो पूरा पाठ्यक्रम दोहरा लिया है, और तुमने?
विमल– पाठ्यक्रम तो मैंने भी दोहरा लिया है, पर कई सवाल ऐसे हैं, जो मुझे नहीं आ रहे हैं।
अक्षर– ऐसा क्यों?
विमल– जब वे सवाल समझाए गए थे, तब बीमारी के कारण मैं स्कूल नहीं जा सका था।
अक्षर– कोई बात नहीं चलो, मैं तुम्हें समझा देता हूँ। शायद तुम्हारी समस्या हल हो जाए।
विमल– पर इससे तो तुम्हारा समय बेकार जाएगा।
अक्षर– कैसी बातें करते हो यार, अरे तुम्हें पढ़ाते हुए मेरा दोहराने का काम स्वतः हो जाएगा। फिर, इतने दिनों की मित्रता कब काम आएगी।
विमल– पर, मैं उस अध्याय के सूत्र रट नहीं पा रहा हूँ।
अक्षर– सूत्र रटने की चीज़ नहीं, समझने की बात है। एक बार यह तो समझो कि सूत्र बना कैसे। फिर सवाल कितना भी घुमा-फिराकर आए तुम ज़रूर हल कर लोगे।
विमल– तुमने तो मेरी समस्या ही सुलझा दी। चलो अब कुछ समझा भी दो।

2) पुस्तक विक्रेता की दुकान पर किताबें खरीदने आए छात्र और दुकानदार की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

छात्र –अंकल जी नमस्ते, मुझे किताबें चाहिए।
दुकानदार– नमस्ते बेटा। तुम्हें कौन–सी पुस्तकें चाहिए।
छात्र– मुझे नौवीं की पुस्तकें चाहिए।
दुकानदार– यह लो नौंवीं की पुस्तकों का सेट।
छात्र– अरे। यह बंडल खोलो तो सही।
दुकानदार– इन्हें घर जाकर देखना, ठीक न होगी तो बदल दूंगा।
छात्र– मुझे किताबें यहीं देखनी है। अब बंडल खोलो।
दुकानदार– यह लो देखो।
छात्र– अरे। इनमें तो एक भी किताब एनसीईआरटी की नहीं है।
दुकानदार– पर इनमें उत्तरः भी तो हैं। सारे बच्चे यही पढ़ते हैं।
छात्र– नहीं मुझे तो एनसीईआरटी की पुस्तकें ही चाहिए?
दुकानदार– बेटा इनका दाम कम है और उत्तरः के लिए गाइड भी नहीं खरीदना पड़ेगा।
छात्र– एनसीईआरटी की पुस्तकें देने में आपको क्या परेशानी है?
दुकानदार– यह लो उन्हीं पुस्तकों का सेट और यह रजिस्टरों का बंडल। इनके साथ ये रजिस्टर भी खरीदना होगा।
छात्र– यह तो सरासर अन्याय है। तुम मुझे ठगना चाहते हो। मैं अभी पुलिस को फ़ोन करता हूँ।
दुकानदार– फ़ोन की बात छोड़ो, यह लो पुस्तकें, पैसे दो और जाओ।
छात्र– ये हुई न बात।

3) अपने–अपने जीवन लक्ष्य के बारे में दो मित्रों की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

रंजन – मित्र चंदन, बारहवीं के बाद तुमने क्या सोचा है?
चंदन – मित्र रंजन मैंने तो अपना लक्ष्य पहले से ही तय कर रखा है। मैंने डॉक्टर बनने के लिए पढ़ाई भी शुरू कर दिया
रंजन– डॉक्टर ही क्यों?
चंदन– मैं डॉक्टर बनकर लोगों की सेवा करना चाहता हूँ।
रंजन– पर सेवा करने के तो और भी तरीके हैं ?
चंदन– पर मुझे यही तरीका पसंद है। डॉक्टर ही रोते–तड़पते मरीज के चेहरे पर मुसकान लौटाकर वापस भेजते हैं।

रंजन– पर कुछ डॉक्टर का भगवान का दूसरा रूप नहीं कहा जा सकता है?

चंदन – पर मैं सच्चा डॉक्टर बनकर दिखाऊँगा पर तुमने क्या सोचा है, अपने जीवनलक्ष्य के बारे में?

रंजन– पर इतनी मेहनत तो अपने वश की नहीं। सुना है–डॉक्टर, इंजीनियर बनने के लिए बड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है जो मेरे वश की नहीं।

चंदन– पर बिना मेहनत सफलता कैसे पाओगे? रंजन–मैं नेता बनकर देश सेवा करना चाहता हूँ।

चंदन– तूने ठीक सोचा है। हल्दी लगे न फिटकरी, रंग बने चोखा।

रंजन– नेता बनना भी आसान नहीं है। तुम्हारे लक्ष्य के लिए शुभकामनाएँ।